From: Shirish Dave < >

प्रधान मंत्री को एक सार्वजनिक पत्र. “बंगालमें ममता प्रेरित आतंकवाद”

मुज़में है बगदादीकी रुह

क्या बीजेपी कार्यकर्ताओंकी और मतदाताओंकी शहादत व्यर्थ जायेगी?

माननीय प्रधान मंत्रीश्री,

एवं

माननीय गृहमंत्रीश्री,

मैं शिरीष मोहनलाल दवे, उ.व. ८१, आपको यह पत्र स्वस्थ प्रज्ञा और स्वस्थ शारीरिक अवस्थामें लिख रहा हूँ. मैं ही नही, प्रत्येक राष्ट्रवादी व्यक्तिकी इच्छा इस प्रार्थना पत्रमें प्रतिबिंब है ऐसा मैं मानता हूँ और आप भी मानें.

पश्चिम बंगालमें साम्यवादीयोंका शासन आया तबसे, राजकीय हत्याओंकी परंपराका प्रारंभ हुआ. उसके पहेले भी ईन्डीयन नहेरुवीयन कोंग्रेसके (आइ. एन. सी.) शासन

कालमें भी अल्प मात्रामें ऐसी हत्याएं होती थीं. किन्तु स्थिति अविभाज्य भारतके कुछ मुस्लिमोंकी तूष्टिके कारण और कोंगी (आइ. एन. सी.)के शासनकी अक्षमता के कारण थी. उस स्थितिको कोंगी कुशासनका एक उप-उत्पादन (बाय-प्रोडक्ट) माना गया था.

बेंगालमें राजकीय हत्याएं ही नहीं अराजकता होना यह कोई नयी बात नहीं है. क्यों कि कोंगीके सुदीर्घ शासनकी यह देन है. अस्तु.

ममता बेनर्जीने तो अराजकताकी सभी सीमाओंका उल्लंघन कर दिया है. बेंगालमें अराजकताकी घटनाएं तो छोड ही दो. ममता बेनर्जीने परिस्थिति और भी गम्भीर कर दी है. यह अब स्पष्ट हो गया है कि वह केवल अराजकता को ही नहीं किन्तु आतंकवादको भी प्रेरित कर रही है.

(१) साम्यवादीयों और कोंगीयोंकी तरह ममता बेनर्जी अराजकता को तो प्रेरित करती है. यह तो आपने चीट-फंड घोटालेमें ही उसका आचरण देख लिया था. केन्द्रकी प्रत्येक संविधानीय कार्यवाहीको बाधित करनेमें वह कृतनिश्चयी ही होती है. यह तथ्य आपको, जनतासे भी अधिक, और सुचारुरुपसे अवगत है.

उदाहरणः चीट फंड घोटालेमें सीबीआईकी कार्यवाही में अवरोध पैदा करनेके लिये ममता बेनर्जी धरनेपर बैठी थीं. इससे अधिक दुराचार क्या हो सकता है?

(२) स्थानिक स्वराज्य (लोकल बोडी) के चूनावको प्रारंभसे अंततक, हिंसक बनानेमें ममता बेनर्जी और उसका शासनका पूरा उत्तरदायीत्व था.

(३) बेंगालके राजपालश्रीने, कई बार आपका ध्यान आकर्षितक करनेके लिये पत्र लिखे थे. किन्तु आपकी दीशासे कोई भी अर्थपूर्ण कार्यवाही नहीं हुई थी.

(४) ममता बेनर्जी आप दोनोंको जब भी संबोधित करती है संबोधन हमेशा कटूता पूर्ण होता है. आपने उसको कभी भी गंभीरतासे नहीं लिया है. हमने सोचा कि चलो यह तो आपका आंतिसरिक मामला है. किन्तु उनका यह प्रयोग था. आपको ज्ञात होगा कि उद्ध्व ठकरेने (सीएम. महाराष्ट्र), अपना एक व्यंग चित्रको “लाईक” करने वाले को गिरफ्तार करदिया था. तो ममताने जय श्रीराम बोलनेवालेको गिरफ्तार करनेका

आदेश दे दिया था. ये है इन दोनोंका असहिष्णुता वाली और एकाधिकारवादी मानसिकता.

इनसे भी बढकर कई उदाहरण है कि जहां जनतंत्रका उपहास हुआ है और आप मौन रहे थे.

(५) पालघरमें सशस्त्र पूलिसदलके समक्ष, हिन्दु संतोकी पीट पीट कर हत्या हुई. उस समय वहाँ शरद पवारके पक्षका एक वरिष्ठ नेता उपस्थित भी था. पूलिस अधिकारीने स्वयं वयोवृद्ध संत, जो पूलिस अधिकारीके हाथको पकड के उनको विनंति कर रहा था कि वह पूलिस अधिकारी, विधर्मी झुन्डसे उसकी रक्षा करें. उस पूलिस अधिकारीने उस वयोवृद्ध संतको झुन्डके हवाले कर दिया.

यह पूरी घटना को दबा दी गयी. जब रीपब्लिक टीवी पर इस घटनाका प्रसारण हुआ तब उद्धव ठाकरे रीपब्लिक भारत टीवी चेनलके मालिक अर्णव गोस्वामीके उपर आगबबुला हो गया.

उद्धव ठाकरेने अर्णव गोस्वामीका, अलोकतांत्रिक और फर्जी तरिकेसे क्या हाल किया वह पूरा देश जानता है. उद्धव ठाकरेने अर्णवकी अन्यायी गिरफ्तारी की, और उसको पूलिस स्टेशनमें पीटा गया.

(६) ऐसा ही हाल कंगना रणौत (बोलीवुडकी एक अभिनेत्री)का किया गया. उसका घर तोड दिया गया.

क्यों कि उसने बोलीवुडके महानुभावोंके काले करतूतोंको प्रकाशित किया जिनमें हत्या तक सामिल थी. और इन काले करतूतोंकी पार्श्वभूमिमें ड्रगमाफिया-बोलीवुड-पूलिस-महाराष्ट्र शासनके नेतागण था.

इन सभी घटनाओंके विषय पर आपकी केन्द्र सरकार मौन और निस्क्रिय रही.

(६) आपका यह मौन भारतकी राष्ट्रवादी जनताकी अपेक्षासे विपरित था.

आपकी सरकारके इस मौनने ममता बेनर्जीकी एकाधिकारवादी संस्कारको और बहेकाया. चूनाव अभियान अंतर्गत उसने धर्म और क्षेत्रवादका घृष्टता पूर्वक उपयोग किया. उसने अपने पूलिस तंत्रको भ्रष्ट कर दिया था और उनको जनताको पीडित करनेका अधिकार दे दिया था. इसके कारण उसने पूलिस अफसरोंसे शपथ ग्रहण करवाया था कि हम पूलिस लोग हर हालतमें कुछ भी कारनामे करके ममतादीदीकी पार्टीको चूनावमें जित प्राप्त करवायेंगे. ममतादीदीकी पार्टीको मत नहीं देनेवालोंका बुरा हाल करेंगे.

(७) ममताने जनताको धमकी भी दी थी कि जो लोग बीजेपीको वोट देंगे उनको चून चूनके मारा जायेगा.

(८) भ्रष्ट समाचार माध्यमोंके मूर्धन्योंने तो क्लबहाउस मीटींग करके बीजेपीकी लोकप्रियताको देखकर अपनी चिंता संवेदना प्रकट करके बीजेपीको हरानेके लिये एकजूट होनेका एलान भी कर दिया था.

(९) विधानसभा चूनावके पहेले तो कई बीजेपी कार्यकर्ताओंकी हत्या की गयी और सेंकडो बीजेपी कार्यकर्ताओंको पीटा गया. इसके उपर ममता और दंभी समाचार माध्यम मौन रहा.

(१०) चूनावके पश्चात बीजेपी कार्यकर्ता ही नहीं, बीजेपीको मतदेनेवालोंके घर जला दिया गया. उनकी निर्मम हत्या की गयी. सहस्रोंको प्रताडित किया गया और गंभीर रुपसे आहत किया गया. महिलाओंको निर्वस्त्र करके बिभत्स चेष्टा करके पीटा गया और गेंगरेप किया गया.

पूलिस भी वहां उपस्थित थी. लेकिन वह मौन और निस्क्रीय रही. मानो यह पूर्व निश्चित आयोजन बद्ध कार्यप्रणालीका भाग था और पूलिसको ममताके आदेशके अनुसार ऐसा ही करना था.

आपकी सरकारके मौनने ममताकी अपराधिक चारित्र्यको बढावा दिया है.

(११) आपने सूना कि ममताने अपने इस आतंक के विषयमें क्या कहा?

यह बीजेपीका आंतरिक और आपसी टक्करका मामला है. यह तो केन्द्रका मामला है. तीन माससे पूलिस दल केन्द्र सरकारके आदेश के अनुसार काम करता है.

ममताके कथनका तात्पर्य यह है कि ये सब केन्द्र सरकारने करवाया है. मतलब की उसका कोई उत्तरदायित्व बनता नहीं है. ममताके कथनमेंसे तो यह निष्कर्स निकलता है कि जो तीन मास केन्द्र सरकारके आधिन थे उसके उपर कोई कार्यवाही नहीं होगी. और वास्तवमें भी ऐसा ही होगा. राष्ट्रवादी जनताको संदेश तो यही मिलता है.

पूलिसकी निस्क्रीयता और ममता बेनर्जीका जूठ बोलना अपराध बनता है

(१२) समाचार माध्यमके लोग कौन है?

(१२.१) “जैसे थे वादी” है जो समज़ते है कि ऐसा तो होता ही रहेता है... बेंगालकी जनता तो पहेलेसे ही विद्रोही है ... उनको हत्या, रेप, आग लगाना, हताहत करना ... ये सब चूनावके परिणाम के बाद बीजेपीको मत देनेवालोंके उपर करना विद्रोह लगता है ... काहेका विद्रोह ? आंखे खोलो ... यह तो आतंक है आतंक ...

(१२.२) “खुश हो जाओ ... बेंगालके चूनावके परिणाम तो मोदी और बीजेपीके पराजयके प्रारंभका द्योतक है ... बीजेपीके मतदाताओं पर हमला ...? काहेका हमला ...? यह तो टकराहट है ...

(१२.३) “हम तो अलग यानी कि सबसे भीन्न है ... बंगालमें तो ऐसा होता ही रहेता है ... रवीन्द्र सरोवर की घटना को याद करो. वहां तो सेंकडों महिलाओंको नग्न कर के रेप किया था. यहां तो केवल डबल डीजीटकी संख्यामें ही महिलाओंको नग्न करके रेप हुआ है. हम लोग तो समग्रकालके परिपेक्ष्यमे हरेक घटका मुल्यांकन करते है. कोरोनामें जो सहस्रों लोग मर रहे है उनकी चिंता करो ...

(१२.४) “हम तो निरपेक्षता में मानते है. गुजरातमें नरेन्द्र मोदीने २००२में क्या किया था?

ये निरपेक्षवादी मूर्धन्य लोग, २००२में साबरमती एक्सप्रेसकी रेल्वे कोचमें रहे ५९ हिन्दु, जिनमें महिला बच्चे भी थे, उन सबको जिंदा जला देनेवाली घटनाकी याद दिलाते है. ५९ हिन्दुओंको जिन्दा जलादेनेसे, प्रतिक्रियाके रुपमें कौमी दंगे हुए थे. जिन में हिन्दु और मुस्लिम दोनों मरे थे. पूलिस द्वारा हुई गोलीबारीमें हिन्दु अधिक मरे थे.

अब ये तटस्थताके घमंडी लोग "कोंगीके स्थानिक नेताद्वारा ५९ हिन्दुओंको जिंदा जलाके मौतके घाट उतारनेकी गोधरा स्टेशनकी घटना" और बेंगालमें "बीजेपीको मत देना" को समकक्ष मानते है.

लेकिन हे निरपेक्ष फर्जी तटस्थताके दंभी पूजारी महर्षि लोग सूनते हो? तुम्हें प्रमाणभान की प्रज्ञाकी आवश्यकता है.

(१२.५) कुछ मूर्धन्य लोग बेंगालकी ममता प्रेरित और आयोजित इस हत्याकांडका सियासती अर्थघटनवाला विवरण (नेरेटीव्ज़) देते है और कहेते है बीजेपी लोग बढाचढाके बोलते है और इस आपसी टकराहटको शस्त्रके रुपमें उपयोग करते है. ऐसे और इसके समकक्ष विवरण बनानेवालोंमें कई मूर्धन्य कोलमीस्ट्स है. इन सबका जूठ फैलानेका और जनताको गुमराह करनेका अपराध बनता.

हे नरेन्द्र मोदीजी और अमित शाहजी,

(१२.६) यदि कोंगी नहेरुवंशी फरजंद, प्रवासी श्रमजीवीयोंको अपने राज्यमें लेजानेके लिये "सौ बसें तयार है" ... दुसरा फरजंद बोलता रहे ... नरेन्द्र मोदीने ५००० करोड एकड भूमि कच्छमें अंबाणीको दानमें दे दी ... केज्रीवाल "भारत तेरे टूकडे होगे" बोलनेवालोंको कह सकता है कि तुम आगे बढो, हम तुम्हारे साथ है,

और इन सबसे बढकर ममताकी सरकार राज्य प्रेरित हत्याएं और अब तो राज्य प्रेरित आतंकवाद फैला रही है, ... फिर भी इन लोगोंका बाल भी बांका न हो और चैनसे अपनी मनमानी करते रहे ..., तो राष्ट्रवादी मतदाता आपसे क्या उम्मिद रक्खें?

(१३) हमारा विश्वास तूटा नहीं है

हमें ज्ञात है कि आप मनसे और बुद्धिशक्तिसे दुर्बल नहीं है. आपका विकल्प तो गद्दार और भारतकी संस्कृतिके दुश्मन ही है.

हमें विश्वास है कि आपने ममता बेनर्जीको प्रभावकारी ढंगसे दंडित करने आयोजन किया ही होगा.

जनता जिनको चाहे उनको अपना मत दे सकती है, यह जनताका जनतांत्रिक अधिकार है. इस अधिकारका उपयोग करनेवालोंकी, ममता हत्या करे या और गेंगरेप करे, या और प्रताडित करे, या और उनके घर जला दें या और लूट ले या और उनको अपना घर छोडने पर विवश करे ... तो यह केवल और केवल ममताका राज्य प्रेरित हत्याकांड ही है. ममता बेनर्जी कभी देशकी नागरिकता नहीं रख सकती. ममता की नागरिकता और उसका पासपोर्ट खत्म करो. राज्यद्वारा हिंसा फैलानेवाली को तो आजिवन कारावास ही होना चाहीये. ममता बेनर्जीको पदच्यूत करो और उसके उपर न्यायिक कार्यवाहीका प्रारंभ करो.

आपका हितैषी,

शिरीष दवे